University in News on 28 March 2025

AMAR UJALA MY CITY PAGE 7

लविवि: सैन्य और मेडिकल भूगोल की पढ़ाई करेंगे छात्र

भूगोल विभाग ने शामिल किए छह नए प्रश्नपत्र, छात्रों को मिलेगा लाभ

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में भूगोल विभाग के विद्यार्थी अब परंपरागत भूगोल पाठ्यक्रम के साथ ही आधुनिक भूगोल से जुड़े विषयों का भी अध्ययन कर सकेंगे। इसके लिए उन्हें सैन्य और मेडिकल भूगोल की पढ़ाई कराई जाएगी। इससे वह कोर्स के साथ-साथ युद्ध क्षेत्र के विषयों की जानकारी भी हासिल कर पाएंगे।

नई शिक्षा नीति के तहत भूगोल विभाग ने सैन्य और मेडिकल भूगोल को कोर्स में शामिल किया है। क्षेत्रीय भूगोल में रोग और स्वास्थ्य के बारे में पढ़ाया जाएगा। सैन्य भूगोल में देश की सीमाओं से जुड़े तथ्यों की जानकारी दी जाएगी। नए प्रश्नपत्र दो और एक वर्षीय दोनों परास्नातक पाठ्यक्रमों में शामिल किए जा रहे हैं।

इनकी विशेषता यह है कि यह भारतीय भौगोलिक परिस्थितियों, पर्यावरण, मौसम और क्षेत्रीय विविधताओं के हिसाब से तैयार किए गए हैं। विद्यार्थी भूगोल विभाग में धार्मिक व ऐतिहासिक स्थलों की प्राचीनता और उपयोगिता के बारे में भी समझेंगे। इसके तहत उन्हें भौगोलिक डाटा विश्लेषण, टूरिज्म, कृषि उपज, जलसंसाधन, ग्रामीण विकास की विविधताओं के बारे में बताया जाएगा।

विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने का हो रहा प्रयास : विभागाध्यक्ष प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि नए प्रश्नपत्रों में पहला मेडिकल भूगोल एक प्रश्नपत्र होगा। इसमें भौगोलिक छात्रों को प्रदेश की बीमारियों से संबंधित विषयों को पढ़ना होगा। जियो इंफॉर्मेटिक्स प्रश्नपत्र में भौगोलिक तथ्यों के विश्लेषण की क्षमता की जानकारी दी जाएगी। तीसरे प्रश्नपत्र में टूरिज्म भूगोल, चौथे में ग्रामीण विकास, पांचवें प्रश्नपत्र में जलसंसाधन और छठवें प्रश्नपत्र में सैन्य भूगोल पढ़ाया जाएगा।

इसमें सीमाओं के बारे में उनके भौगोलिक स्थितियों, भाषा, खानपान समेत सभी पहलुओं से अवगत कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि नए प्रश्नपत्र आधुनिक जरूरतों के हिसाब से हैं, जिससे छात्रों को व्यापक लाभ होगा। विद्यार्थियों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है।

i-NEXT PAGE 4

राष्ट्र निर्माण के लिए गांव के विकास को दें महत्ता

LUCKNOW : एलयू के सोशियोलॉजी डिपार्टमेंट की तरफ से आयोजित तीन दिवसीय नेशनल सेमिनार समकालीन भारत में राष्ट्र निर्माण की चुनौतियां का समापन गुरुवार को डीपी मुकर्जी हॉल में किया गया. जिसमें लोहिया शोधपीठ के डायरेक्टर प्रो. डीआर साहू ने प्रो. देबल सिंघाराय, प्रोफेसर श्वेता प्रसाद और प्रो वीसी मनुका खन्ना का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया. प्रो. श्वेता प्रसाद ने बताया कि कैसे हम लोहिया जी के विचारों की अवधारणा का प्रयोग करते हुए राष्ट्र निर्माण की चुनौतियों को हल कर सकते हैं. राष्ट्र निर्माण के लिए राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई गांव के विकास को महत्ता देनी चाहिए. इस नेशनल सेमिनार में कुल 200 रिसर्च स्टूडेंट्स ने पार्टिसिपेट किया, जिसमें से 50 रिसर्चर्स ने अपने रिसर्च पेपर भी प्रस्तुत किए.

PIONEER PAGE 3

समाज में असमानता किसी ना किसी संघर्ष को जन्म देती है

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के अंतर्गत गुरुवार को डॉ राम मनोहर लोहिया शोधपीठ द्वारा आयोजित समकालीन भारत में राष्ट्र निर्माण की चुनौतियाँ विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठीका समापन सत्र डीपी मुखर्जी सभागार में किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रोफेसर देबल के सिंघराय, प्रोफेसर श्वेता प्रसाद और लखनऊ विश्वविद्यालय की उपकुलपति प्रोफेसर मनुका खन्ना उपस्थित रहीं।

लोहिया शोधपीठ के निदेशक प्रोफेसर डी आर साहू ने कार्यशाला में विभिन्न क्षेत्रों से आए अतिथियों व प्रवक्ताओं का स्वागत किया। प्रोफेसर देबल के सिंघाराय, समकालीन अध्ययन केंद्र, प्रधानमंत्री संग्रहालय पुस्तकालय नई दिल्ली ने अपने समापन उद्बोधन में कृषि एवं गामीण क्षेत्र के विकास को राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक बताते हुए कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पन्न बाधाओं एवं चुनौतियों के बारे में बताया। भारत मे कृषक और नगरीय संक्रमण अवस्था तथा भारत में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में उपनिवेशकालीन संदर्भों का उल्लेख करते हुये मेटकाफ, हेनरी मेन एवं मार्क्स आदि के अध्ययनों के साथ साथ स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार, हरित क्रांति की महत्ता और वैश्वीकरण 1991 के बाद तथा 73वां सँविधान संसोधन और 21वीं सदी में बढ़ता ग्रामीण, नगरीय प्रवसन और देश में बढ़ता विदेशी कर्ज आदि मुद्दों को राष्ट्र निर्माण में आने वाली चुनौतियों के रूप में बताया। प्रो श्वेता प्रसाद, सचिव आईएएसए ने बताया कि कैसे हम डॉ. लोहिया के विचारों की अवधारणा का प्रयोग करते हुए राष्ट्र निर्माण की चुनौतियों को हल कर सकते है। उन्होंने बताया कि राष्ट्र निर्माण के लिए हमे अपने राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई गाँव के विकास को महत्ता देनी होगी। उन्होंने राष्ट्र निर्माण के लिए डॉ. लोहिया की सप्तक्रांति की अवधारणा को आज के समय में भी प्रासंगिक बताया। प्रोफेसर मनुका खन्ना, उपकुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, ने डॉ. राम मनोहर लोहिया जी के राजनैतिक विचारों के बारें मे चर्चा की साथ ही बताया कि आजादी के पूर्व राष्ट्र निर्माण जैसी कोई अवधारणा थी ही नहीं। लोहिया के सप्तक्रांति के बारे में बताते हुए कहा कि समाज में असमानता किसी ना किसी प्रकार के संघर्ष को जन्म देती है।

AMRIT VICHAR PAGE 6

एनएसएस का शिविर का समापन

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, विश्वविद्यालय की दोनों एनएसएस इकाइयों द्वारा आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर सम्पन्न हो गया। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. दीपक गुप्ता और डॉ. खुशबू वर्मा के नेतृत्व में स्वयंसेवकों ने नुक्कड़ नाटक और काव्य प्रस्तुति के माध्यम से प्रेरणादायक संदेशों का प्रभावी प्रसार किया।